

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

(मुद्रण तारीख :- 07.08.2016)

■ अंक-609 ■ तारीख- 08 अगस्त 2016, श्रावण शुक्ल पक्ष -6 ■ सोमवार ■ उदयपुर ■ कुल पृष्ठ-2 ■ मूल्य -1 रूपया

(पृष्ठ-1)

अनमोल वचन (सत्यसाई बाबा)



अगर कोई ऐसा व्यक्ति, जिसे आप पसंद नहीं करते, आपके पास आए तो हमें उसमें गलती खोजने की आवश्यकता नहीं है। उन पर हँसने या उनकी अवमानना करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यही काफी है कि आप उसके आने से प्रभावित हुए बिना अपना कार्य कर सकें। उन्हें अपने मार्ग का पालन करने दें, उन्हें अकेला छोड़ दीजिए। यही व्यवहार उदासीन भाव कहलाता है, अर्थात् अप्रभावित होना। अगर आप इसका अभ्यास करेंगे, तब आपको भगवान के लिए अपरिवर्तित प्यार प्राप्त होगा। यह व्यवहार आपको चिरस्थायी शांति, आत्म नियंत्रण और मन की शुद्धता भी प्रदान करेगा।

शोभा

कैंची वस्त्र को फर्फटे से काटे जा रही थी। वस्त्र ने नम्रभाव से धीमी आवाज में कैंची से पूछा - "बहिन मेरा अंग-प्रत्यंग विच्छिन्न क्यों कर रही हो?"

मुस्कराती हुई कैंची ने प्रत्युत्तर दिया - दूसरों की भलाई के लिए, उनके अंग की रक्षा के लिये और उनकी शोभा एवं मान-मर्यादा बढ़ाने के लिये। "जीवन वही जो परहित काम आए।

पाँच बातें जीवन में उतारने योग्य

1. ऋण हो, ऐसा खर्च मत करो।
2. पाप हो, ऐसा कमाई मत करो।
3. क्लेश हो, ऐसा मत बोलो।
4. चिन्ता हो, ऐसा काम मत करो।
5. रोग हो, ऐसा मत खाओ।

प्रार्थना

सड़क पर कहीं सर्दी में ठिठुरते हुए एक निर्धन, दीन, वृद्ध के पास से एक व्यक्ति गुजर रहा था जिसने वृद्ध की सहायता के लिए अपनी जेबें टटोली, लेकिन कुछ हाथ नहीं आया। उस व्यक्ति ने प्रभु को पुकार कर प्रार्थना की। "प्रभो, सर्दी में ठिठुरते हुए इस गरीब बूढ़े को एकाध पैसा भी देने में मैं असमर्थ हूँ। उसे तेरी करुणा की आवश्यकता है।" उसे पादचारी की प्रार्थना क्या सेवा कार्य नहीं है? यह असंभव है कि उसकी प्रार्थना अनसुनी रहेगी।

दिल के लिए बादाम



रोज 50 ग्राम बादाम खाने से रक्तचाप घटता है और रक्त का प्रवाह बेहतर होता है। इससे दिल की बीमारियों की आशंका कई गुना गिर जाती है। शोधकर्ताओं के मुताबिक बादाम में मौजूद प्रोटीन और गुड फैट दिल की दवा बनता है।

बात पते की

पूरे समुद्र का पानी भी एक जहाज को नहीं डुबो सकता जब तक पानी को जहाज अन्दर न आने दे। इसी तरह दुनिया का कोई भी नकारात्मक विचार आपको नीचे नहीं गिरा सकता जब तक कि आप उसे अपने अन्दर आने की अनुमति न दे दें।

'जीवन वाहिनी' सेवा 15 अगस्त से होगी शुरू



राजस्थान में 15 अगस्त से राजकीय आपातकालीन 108 सेवा, 104 जननी एक्सप्रेस सेवा (चिकित्सीय परामर्श सेवाओं सहित) एवं चिकित्सालयों की बेस एम्बुलेंस सेवा का एकीकरण हो जाएगा। इस समेकित सेवा को जीवन वाहिनी के नाम से जाना जाएगा। एनजीओ जीवीके ईएमआरआई तीनों सेवाओं का एक साथ संचालन करेगा। किसी आपात स्थिति में आमजन की ओर से फोन करने पर या नियमानुसार एम्बुलेंस की मांग होने पर एनजीओ 108 सेवा व 104 जननी एक्सप्रेस सेवा में से कोई एक वाहन भेजेगा। मातृ-शिशु से सम्बंधित ट्रांसपोर्ट के लिए 104 व एक्सीडेंट जैसे आपातकालीन स्थितियों के लिए 108 का उपयोग किया जाएगा। नॉन इमरजेंसी वाली स्थिति में मरीज को ट्रांसपोर्ट बेस एम्बुलेंस से दिया जाएगा। बेस एम्बुलेंस का उपयोग निःशुल्क नहीं होगा। बेस एम्बुलेंस की सुविधा लेने के लिए उपयोगकर्ता को निर्धारित दर से भुगतान करना होगा। बेस एम्बुलेंस में ऑक्सीजन, बीपी मशीन व अन्य जीवन रक्षक उपकरण जीवीके द्वारा लगवाए जाएँगे।

हटाए आँखों के नीचे के डार्क सर्कल



पूरी नींद : आँखों के नीचे डार्क सर्कल होने का सबसे बड़ा कारण नींद की कमी है। आपको रोज कम से कम 7-9 घंटे सोना चाहिए। इससे आप सुबह उठकर बिल्कुल तरोताजा महसूस करेंगे और डार्क सर्कल भी धीरे-धीरे कम होने लगेंगे।

हेल्दी डाइट : विटमिन की कमी के चलते भी डार्क सर्कल हो जाते हैं। इसलिए खाने में हेल्दी डाइट लें। ऐसा खाना खाए जिसमें प्रचुर मात्रा में विटमिन सी और विटामिन के हो। ताजे फल और सब्जियों को अपने खाने में शामिल करें।

बर्फ और खीरा : आँखों पर बर्फ की क्यूब या खीरा लगाएं। इससे आँखों के नीचे की सूजन कम हो जाएगी और डार्क सर्कल मिटने लगेंगे। ऐसा करने से आँखों की थकावट दूर होती है और टंडक पहुँचती है।

बर्फ की क्यूब या खीरे से आँखों के नीचे की सूजन कम हो जाती है और डार्क सर्कल मिटने लगते हैं। कई बार काम के तनाव, नींद की कमी और अन्य कारणों से आँखों के नीचे डार्क सर्कल पड़ जाते हैं। जो आपकी खूबसूरती को कम कर देते हैं, इसे ठीक करने के लिए कुछ आसान उपाय जिनसे डार्क सर्कल मिट जाएँगे।

नींबू और टमाटर : टमाटर और नींबू के रस को बराबर मात्रा में लेकर उसमें 1 चम्मच बेसन मिलाएँ। इस पेस्ट को डार्क सर्कल पर लगाएँ और 10 मिनट तक रखें। उसके बाद चेहरा धो लें। कुछ दिनों बाद ही आपको फर्क नजर आने लगेगा। शहद और बादाम तेल : 1 चम्मच शहद में 1 चम्मच बादाम का तेल मिलाएँ और इस मिश्रण को डार्क सर्कल पर लगा कर सो जाएँ। सुबह उठकर ठंडे पानी से चेहरा धो लें। इससे भी डार्क सर्कल हल्के पड़ने लगेंगे।

बिना संकोच सहायता लें और दें

अपने दुख को अकेले ही सहने की कोशिश न करें। अपने दोस्तों, आध्यात्मिक लोगों अपने शुभचिंतकों व प्रोफेशनल की सेवा लेने में हिचकिचाएँ नहीं। यह सहयोग आपको जीवन की उस नई तस्वीर को देखने में मदद करेगा, जिसे आप नहीं देख पा रहे हैं। दूसरों का सहयोग मन में बनने वाले दुख के दुष्क्र को रोक देता है।

संकोच का ध्यान रखें- 'हील योर लाइफ' की लेखिका लुइस एल हे कहती हैं, 'दुख व दर्द से बाहर आने के लिए विचारों को साधना जितना जरूरी है, उतना ही शरीर के पोषण का ध्यान रखना भी। दुख के क्षणों में भी स्वस्थ खाएँ, भरपूर नींद लें और व्यायाम करना न छोड़ें। बंद कमरे से बाहर निकलकर ताजी हवा में

सांस लें। योग करें या प्रकृति के बीच टहलते हुए खुद को इस बात का अहसास कराएँ कि दुख भी मौसम की तरह है। जैसे बहुत ठंड में समस्या होने पर भी मन में विश्वास रहता है कि गर्मियों में सब ठीक हो जाएगा, दुख भी चला जाएगा।

माइंडफुलनेस मेडिटेशन करें-रीथिंकिंग डिप्रेशन के लेखक एरिक मेजल कहते हैं, 'माइंडफुलनेस यानी वर्तमान में जीना। वर्तमान को बिना किसी द्वंद्व के स्वीकारना। होता यह है कि जैसे ही मन अच्छे व बुरे का फैसला करना शुरू कर देता है, वैसे ही हम वर्तमान से दूर हो जाते हैं। लेकिन जब हम दुख को बिना किसी भाव या तर्क के स्वीकारते हैं, खुद के भीतर दुखों के लिए जगह बनाते



हैं, तो भावों पर पकड़ मजबूत होती है और हम अधिक खुशियों के लिए जगह बना पाते हैं। शांत बैठकर चिंतन करें- शांत बैठें और खुद से पूछें कि पहले आपने अपनी चुनौतियों को कैसे पार किया है? बीते कल के इन्ही अनुभवों से प्रेरणा लें। जब ये विश्वास हो जाता है कि आपमें दुख का सामना करने की क्षमता है, तो आप वर्तमान चुनौतियों का

सामना बेहतर तरीके से कर पाते हैं। आप यह देख पाते हैं कि दुख ने आपको कितना मजबूत बनाया है। तनाव को हावी न होने दें-जैसे ही उदासी व असहाय होने का अहसास जोर पकड़ता है, खुशी से पकड़ कमजोर हो जाती है। तनाव हावी होने लगता है। गलत फैसले होने लगते हैं। अच्छे भविष्य की चाह बनाए रखें, तो इससे बच सकते हैं।

मानव मन के बोल



गतांक से आगें...

❖ सेवक का मन ❖

जय हनुमान... सकल गुण निधान

सीता माता ने कहा -

अजर अमर गुणनिधि सुत होहू, करहुँ बहुत रघुनाथक छोहू।

करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना, निर्मल प्रेम मगन हनुमाना।

हनुमान जी तो प्रेम में नाच उठे - छम - छम

Ne&Ne ukp mBsn&ksolj guqku

बोलिए रामचन्द्र भगवान की जय, बोलिए पवन सुत हनुमान की जय। बस आपका-हमारा मन ऐसे ही नाच उठे। जब मैं आपके पास हाजिर हुआ इस पंक्ति को लिखाने के लिए, उसके पूर्व हमारे जीतू भाई, सुरेश भाई ने, मदनजी ने, नृसिंह जी ने हनुमान चालीसा का पाठ किया था।

t ; guqku Kku xqkl lxj

आपके रोम-रोम में मानवता जग जावे, आपके रोम-रोम में करुणा मुस्कुरा उठे। थैली भरना नहीं, उतना ही भोजन करना, पेट को भूख लगे उससे थोड़ा कम लगभग 75 प्रतिशत। पेट की थैली में कुछ पानी के लिए जगह रख लेना, कुछ वायु के लिए जगह रख लेना। मितभाषी बनें, मित आहारी बनें, मधुर वचन बोलें। 'सत्यम् ब्रूयात, प्रियम् ब्रूयात न ब्रूयात सत्यम् अप्रियम्' ऐसी वाणी ना बोलें, जो कड़वी हो। बहुत छोटे - छोटे सूत्र हैं, ये मानव धर्म के सूत्र हैं।

❖ मन की तरंग ❖

पाणिनी की व्याकरण

मानव धर्म वाला उदास नहीं रहता है, रोम-रोम से तरंग उठती हैं। जोश में होश रखना, वीर रस का मतलब किसी को डराना नहीं, आप डराने के लिए थोड़ी आये हो-लाला। आप भयभीत मत करो, आप निर्भय करो। आप जिससे मिलो, उसको लगे कि मुझे आनन्द आ गया। आप जिससे मिलो, उसको लगे कि मेरी प्रसन्नता हजार गुणी हो गई, आपके-हमारे हाथ में है। ये गुब्बारे व चॉकलेट आपकी जेब में रखिये, कोई भी बच्चा मिले तो उसको दे दीजिए। बच्चा मुस्कुरायेगा और भगवान राजी हो जायेगा। आपको सुखायु कर देंगे, आपको दीर्घायु कर देंगे। बलवान बना देंगे, धनवान बना देंगे, प्रज्ञावान बना देंगे, गुणवान बना देंगे, बोलिये गुणी महाराज की - जय।

मन की तरंग मार लो, बस हो गया भजन।

आदत बुरी सुधार लो, बस हो गया भजन।

बुरी तरंग मारना, चोरी की तरंग मत आने देना। 'परद्रव्येषु लोप्यत', राँका ने देखा कि कुछ धन पड़ा हुआ है सोचा, बाँका का मन नहीं चल जाये, ये पराया धन है, ये मेरा धन नहीं है। जैसे ही उस पर धूल डाल रहे थे, बाँका पहुँच गयी। क्या कर रहे हैं पतिदेव?धूल पर धूल क्यों डाल रहे हो, मानव धर्म का अर्थ है चोरी नहीं करना। धर्म के दस लक्षणों में मनुस्मृति में मनु महाराज ने बताया 'अस्तेय'। अस्तेय का अर्थ है चोरी नहीं करना, मिलावट नहीं करना, ये कितना आतंकवाद हो गया ? निरपराध लोगों को मार डालते हैं, बेचारों को डरा कर रखते हैं। कैसा दुर्भाग्य हो गया अपने भारत में, ये अपने देश में, जिसमें बालगंगाधर तिलक ने मांडवे जेल में गीता रहस्य लिख दी थी, जिसमें पाणिनी जी के मित्र को जब लगा कि मेरी व्याकरण को सुनकर पाणिनी कुछ उदास हुए हैं। पूछा-मित्र पाणिनी तुम उदास क्यों हो गये? पाणिनी ने कहा-मित्र, मैंने भी एक व्याकरण लिखी। मैंने सोचा कि मेरी व्याकरण दुनिया में सर्वश्रेष्ठ होगी, लेकिन आपकी व्याकरण तो मेरी व्याकरण से हजारों गुणा अच्छी है, आपकी व्याकरण के सामने मेरी व्याकरण को कौन मान देगा ? मित्र ने सुन लिया, दूसरे दिन पाणिनी को आमंत्रित किया कि आओ जल विहार करेंगे, नौका विहार करेंगे।

क्रमशः अगले अंक में...

सम्पादकीय

सुबह बहुत जल्दी उठना दुकान पर जाना, भट्टी चेतन करना, आलू उबालना, मसाले तैयार करना, दूध फेंटना..... और भी कई काम। उधर, दुकान में झाड़ू लगाना, पानी भरना आदि। और यह कार्यक्रम रात में, देर रात तक चलता रहता है। यह दिनचर्या, बल्कि कहना चाहिए जीवनचर्या है एक हलवाई की! जो रात-दिन अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए धनोपार्जन के काम में जुटा रहता है। यदि यही व्यक्ति किसी दिन इस दिनचर्या को छोड़कर कोई अन्य कार्य करे जिसमें धनोपार्जन की गुंजाइश न हो, उदाहरणार्थ - निःशुल्क सेवा आदि, तब उसका मस्तिष्क तेजी से दौड़ेगा - "यह कार्य करने में मुझे क्या लाभ होगा, कहाँ मेरे नाम का उल्लेख होगा - अथवा इतने घंटों की कार्य-हानि के अलावा कुछ भी हाथ न लगेगा।"

उस दिन घर लौटने पर उसकी पत्नी भी कहेगी - "आज तो आपने काफी काम किया है, थक गए होंगे।" सामान्य कार्यक्रम के अन्तर्गत सुबह पाँच बजे से रात ग्यारह बजे तक काम करने के उपरान्त भी घर पहुँचने पर ऐसी टिप्पणी सुनने को नहीं मिलती। विचार किया जाये तो इसके पीछे दो कारण अनुभव होते हैं - धनोपार्जन और सामान्य दिनचर्या।

और हलवाई ही क्यों, न्यूनाधिक रूप में प्रत्येक व्यक्ति का-संभवतः हमारा और आपका भी दृष्टिकोण इससे बहुत अधिक भिन्न नहीं है। सामान्य व्यक्ति प्रत्येक कार्य को धन की तुला पर तोलता है। सम्पूर्ण दिनचर्या ही धन पर आधारित हो गई है। लीक से हटकर कोई कार्य थकावट का कारण बन जाता है। वस्तुतः हमारी सोच ही ऐसी हो गयी है। सेवा कार्य को हमने अपनी दिनचर्या में गिना ही नहीं। यही कारण है कि यह कार्य हमें 'अतिरिक्त कार्य' लगता है। इसमें थकान होती है, संभवतः नाम न होने का दुःख भी होता है।

आईए, हम अपनी सोच को बदलने का प्रयत्न करें। सेवा कार्य को भी दिनचर्या के अंग के रूप में मानें ताकि इसके लिए अलग से प्रयास न करना पड़े, अलग से सोचने की आवश्यकता न पड़े। जीवन के अन्य कार्यों के साथ-साथ सेवा रूपी प्रभु कार्य भी निर्विघ्न चलता रहे।

क्या आपश्री जानते हैं?



1. जिस हाथ से आप लिखते हैं, उसकी उंगलियों के नाखून ज्यादा तेजी से बढ़ते हैं।
2. हमारे शरीर में लोहा भी होता है इतना कि एक शरीर से प्राप्त लोहे से एक इंच की कील भी तैयार की जा सकती है।
3. भास्कराचार्य ने खगोल शास्त्र के कई सौ साल पहले पृथ्वी द्वारा सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने में लगने वाले सही समय की गणना की थीं। उनकी गणना के अनुसार सूर्य की परिक्रमा में पृथ्वी को 365.258756484 दिन का समय लगता है।
4. वाराणसी, जिसे बनारस के नाम से भी जाना जाता है, आज विश्व का सबसे पुराना और निरंतर आगे बढ़ने वाला शहर है।
5. भारत 17वीं शताब्दी के आरंभ तक ब्रिटिश राज्य आने से पहले सबसे सम्पन्न देश था। क्रिस्टोफर कोलम्बस भारत की सम्पन्नता से आकर्षित होकर भारत आने का समुद्री मार्ग खोजने चला और उसने गलती से अमेरिका को खोज लिया।
6. संस्कृत सभी उच्च भाषाओं की जननी माना जाता है। यह कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के लिए सबसे सटीक है, और इसलिए उपयुक्त भाषा है।
7. 70 प्रतिशत लिवर, 80 प्रतिशत आंत और एक किडनी बगैर भी इंसान जिंदा रह सकता है।
8. गुगल से 10 अरब से अधिक पेज जुड़े हुए हैं जो हर 19 महीने में दुगुने हो जाते हैं।
9. सपनों में हम सिर्फ वही चीजें देख सकते हैं जो हम पहले से देख चुके हैं।
10. गरम पानी ठंडे पानी से पहले बर्फ में बदल जाता है।

सुविचार

वही व्यक्ति समर्थ है जो यह मानता है कि वह समर्थ है।

- मनात्म सुन्द

सफलता के लिए असफलता आवश्यक : प्रशांत



नारायण सेवा संस्थान के तत्वाधान में बड़ी ग्राम स्थित सेवा महातीर्थ में दिव्यांगजन से वार्ता एवं उनकी समस्याओं के समाधान की दिशा में 'दिव्यांग वार्ता एवं सत्संग' के आयोजन हुए। जिनमें देशभर से निःशुल्क ऑपरेशन के लिए दिव्यांग व उनके परिजनों ने भाग लिया। कार्यक्रम में संस्थान-संस्थापक श्री कैलाश मानव ने कहा कि

यह जरूरी नहीं कि संसार से विरक्त होकर ही ईश्वर की साधना-आराधना हो सकती है, समाज की बेहतरी के लिए किए जाने वाले प्रयास भी ईश्वर साधना के समान ही हैं। उन्होंने कहा कि आज समाज में कुरीतियां और विसंगतियां यत्र-तत्र देखने में आती हैं। ऐसी स्थिति में परिवार, समाज और देश में परस्पर सहयोग, सद्भाव, संस्कार

और प्रेम से मानव धर्म की स्थापना कर नव जागरण लाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हम 'वसुवैध कोटम्बकम्' की बात तो करते हैं किन्तु घर-परिवार में ही शांति और सामंजस्य के प्रति उदासीन रहते हैं। उन्होंने कहा कि वेद से व्यवहार तक की कथा ही क्रांति कथा का आधार है। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने कहा कि संघर्षों

की राह से गुजर कर ही मनुष्य जीवन आकार पाता है। जिस व्यक्ति ने जीवन में असफलता नहीं देखी वह सफलता के स्वाद को नहीं चख पाता और ना ही उसका महत्व समझ पाता है। कार्यक्रमों का 'आस्था' व 'संस्कार' 'चैनलों' से देशभर में सीधा प्रसारण भी हुआ। संचालन महिम जैन व ओमपाल सिलन ने किया।

मुस्कान मानवता की

कौनो मेरुकी कक "कवे-16/3 q 1/2

❖ कर्म प्रधान जीवन ही सार्थक ❖

42 साल पूरे हुए। दो हजार में से 27 निकाल दो 73 में जन्म हुआ प्रशांत का। ये बात में आपको 1985 की बोल रहा हूँ। उस समय 12 साल का था। कल्पना 14 साल की थी। उस समय प्रशांत 7वीं कलाश में पढ़ता था। ज्ञान मन्दिर में प्रणाम करता हूँ ज्ञान मंदिर विद्यालय को। प्रणाम करता हूँ टीकम चन्द जी सा. को इतनी सादगी। सादा जीवन उच्च विचार धन्यवाद है। गुणों को तो धन्यवाद देना ही चाहिए। गुणवान का आदर करना ही चाहिए। गुणवान का आदर करना ही चाहिए। रूपवान का करो न करो। क्यूँ रूप जिसको बोलते वो तो ईश्वर की लीला है। हमारे चमड़ी का रंग किसी कारण से किसी का गोरा हो जाता है। किसी का सांवला हो जाता है। किसी का गँधूआ हो जाता है। कोई लम्बा हो जाता है। कोई टिगना रह जाता है। हमारे प्रधानमंत्री स्व. श्री लाल बहादुर शास्त्री जी बहुत छोटे कद के थे। और उनको जब जिनेवा से ताशकंद समझौता हुआ था। उसके पहले बड़ी वार्ताएं हुई। मैंने इतिहास पढ़ा अभी हॉ उस समय पाक विदेश मंत्री जुल्फी अलीकार भूटो। कहते थे हम 1000 साल तक भारत से लड़ते रहेंगे। अरे अहसान मानना चाहिए भारत को बड़ा मानना चाहिए आप भारत में पैदा हुए हो। भारत से निकले हो, प्रेम से रहना चाहिए।

आजादी के बाद से लगातार लड़ते रह रहे हो। हमें भी कष्ट आपको भी कष्ट। एक पत्रकार ने पूछा था शास्त्री जी याया खां बहुत लंबे हैं आप बहुत छोटे हैं जब आप उनसे बातचीत करते हो तो आपको कठिनाई तो नहीं आती। उन्होंने हंस के कहा - कठिनाई किस बात की भैया? मैं सिर ऊँचा करके बात करता हूँ। और याया खां सिर झुका के बात करते हैं। पर हम न झुकाना चाहते हैं हम आँखों से आँखें मिलाना चाहते हैं। आप भी मानव हो मैं भी मानव हूँ तो ये भी या तीन दिन बाद टूटें आयेगी मैंने कहा भगवान भजेगा। जो भगवान हमें कात्याफला ले जाने वाला है। 22 तारीख को जिस भगवान ने हमें पामेचा सा. से मिलाया सेटलाईट हॉस्पिटल के। मैं प्रणाम करना चाहता हूँ जहाँ पर भी भारत में होंगे राजस्थान में जहाँ पर पोस्टिंग होगी। कुलदीप भैया उनको संदेश भजेगा आप जब भी उदयपुर पधारो हम आपका अभिनन्दन करना चाहते हैं। पामेचा सा. बीच में मैंने सुना था डॉ. सा. सांचोर थे। उस युग में जब नारायण सेवा के पास एक साईकिल नहीं थी। सोहनलाल जी विजयवर्गीय के पास साईकिल थी वो साईकिल से आते थे। सोहनलाल जी पूर्विया की भी साईकिल थी वो साईकिल से आते थे। और मैंने तो आपको बताया था। 600 रुपये की साईकिल 12 महिने की किश्त 50 रुपये महीने में साईकिल ली थी। मेरे पास भी साईकिल थी। एक साईकिल तो थी खुद की। संस्था के पास तो सबकुछ भगवान की कृपा थी। साधनों पर मत जाइये। बहुतों के पास बहुत साधन होते पर प्रेम नहीं होता है। बहुत साधन होते पर रस कम होता है।

बंद न कर देना अपने घर के दरवाजे।
ना मालुम कब कोई, पाहून घर आये।
रिक्त न कर देना, अंतर की रस गगरी।
न मालुम कब कोई, प्यासा स्वर आये।

ये कात्याफला के प्यासे स्वर उदयपुर तक नहीं पहुँच पाते। छः रुपये लगते हैं बस के और कात्याफला से पैदल आयेगे तो 42 किलोमीटर है। बेचारे कभी - कभी उदयपुर आते तो पैदल भी आते हैं। इनके पास छः रुपये नहीं हैं। हमें प्यासे के पास कुएं को जाना पड़ेगा। हम तो उस समय यही लिखते थे कुआं प्यासे के पास। प्यासा नहीं आ पा रहा है। आप चले जाइये न भूखा न आ रहा है। आप जाकर के भण्डारा कर दीजिये न। बहुत भण्डारा देखे हमने धापे हुए को धपाने वाले बहुत भण्डारे देखे हैं। बहुत संपन्नता है अरे सौ रुपये दक्षिणा मिलेगी। इसलिए भण्डारे में चलना रे। भोजन की तो इच्छा नहीं है। तीन जगह जीम के आये हैं। एक जगह 50 रुपये दिए। एक जगह तो लॉटरी खुल गई 200 रुपये दक्षिणा दी, और उसके यहाँ तो कभी नहीं जाऊँगा। 20 रुपये दिए उसने।



जूनगढ़ गुजरात में खूबसूरत गिरनार हिल के आधार पर स्थित है। यह सैलानियों के गिरनार हिल जाने का पॉइंट है। गिरनार हिल में बड़ी संख्या में मंदिर हैं। जूनगढ़ एक आकर्षक शहर है जिसमें कई पुराने भवन हैं। हालांकि बहुत कम सैलानी यहाँ आते हैं। इसके पीछे एक प्रमुख कारण प्रचार की कमी है। लोग शायद जूनगढ़ की शांति और सुंदरता से वाकिफ नहीं हैं।

t u k x < n s d t p y k s f i z i ; 7 u L f y g 8 %

1. अक्षर मंदिर, 2. भावनाथ मंदिर, 3. दरबार हॉल संग्रहालय, 4. सम्राट अशोक के चट्टान शिलालेख, 5. गिरनार पर्वत, 6. जूनगढ़, 7. हड़प्पा युग के अवशेष, 8. सक्का बाग चिड़ियाघर



सादर आमंत्रण

दिव्यांग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध, वंचितजनों एवं विपन्नताओं की सेवा में सत्संग संघ

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

श्रीमद् भागवत कथा

आयोजक

श्रीराम जानकी सेवा समिति एवं समस्त सत्संग मण्डल, धूलिया

दिनांक एवं समय
8 से 14 अगस्त, 2016
दोपहर 3.00 बजे से सायं 6.30 बजे तक

स्थान
कंशव गार्डन, मनोहर टॉकीज
के पास, आगरा रोड, धूलिया (महाराष्ट्र)

कथा व्यास: पूज्य राजीव कृष्ण भारद्वाज

व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द से आज्ञास्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान करायेंगे। आपश्री से अनुगोध है कि सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधारकर श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण लाभ उठावें।

संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999
स्थानीय सम्पर्क सूत्र : 09404822223, 9403449199

निःशुल्क सेवा-सहयोग के प्रति समर्पित

 कमला देवी कोषाध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान	 वन्दना निदेशक नारायण सेवा संस्थान	 जगदीश आर्य डस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान	 देवेन्द्र चौबीसा डस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान
---	--	---	--

भक्ति एवं सेवा के महाधज में एक आहुति आपकी भी कृपया सपरिवार अवश्य पधारें।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक-प्रशांत अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक-सोहन लाल गाडरी
संपादक-लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी-घनश्याम सिंह राठीड